उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया: व्याख्या के आधार

अध्याय 8

आधुनिक अनुप्रयोग और पुराने नियम के युग

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना..1
युगांतरिक विभाजन..1
विभिन्नता..2
रूपरेखा..3
निहितार्थ..5
युगांतरिक विकास..8
पात्र..8
कहानी..10
लेखक..11
अतीत के बारे में..12
वर्तमान के लिए..12
संबंध..14
पृष्ठभूमियाँ..14
मॉडल..15
पूर्वानुमान..17
उपसंहार..18

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया: व्याख्या के आधार

अध्याय आठ

आधुनिक अनुप्रयोग और पुराने नियम के युग

प्रस्तावना

क्या आपने कभी ध्यान दिया कि जब मसीही लोग पुराने नियम को आधुनिक जीवन में लागू करने के बारे में सोचते हैं तो वे चरम सीमा पर चले जाने की प्रवृति रखते हैं? एक चरम पर, कुछ विश्वासी लोग सोचते हैं कि हमें ठीक वैसा ही करने की आवश्यकता है जैसा पुराने नियम के दिनों में परमेश्वर के लोगों ने किया। दूसरे चरम पर, कुछ विश्वासी लोग सोचते हैं कि जो कुछ परमेश्वर ने अपने लोगों को पुराने नियम के दिनों में करने की आज्ञा दी उसे हमें बस भूल जाना चाहिए। लेकिन वास्तव में, सच्चाई इन दोनों चरम सीमाओं के कहीं बीच में है।

जब हमारे दिनों के लिए पुराने नियम को लागू करने की बात आती है, तो हमें दो बातों को याद रखने की आवश्यकता है: हमें कभी भी अतीत में नहीं लौटना चाहिए, लेकिन हमें अतीत को कभी भूलना भी नहीं चाहिए।

हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया* का यह आठवां अध्याय है: *व्याख्या के आधार*, और हमने इसका शीर्षक रखा है "आधुनिक अनुप्रयोग और पुराने नियम के युग।" इस अध्याय में, हम उन तरीकों का पता लगाएंगे जिनमें पुराने नियम का विश्वास, इतिहास के महान युगों या कालों के दौरान विकसित हुआ, और समझाएंगे कि कैसे ये विकास पवित्र शास्त्र के स्वयं हमारे अनुप्रयोग को प्रभावित करते हैं।

इससे पहले वाले अध्याय में, हमने देखा कि पवित्र शास्त्र के मूल श्रोता समकालीन श्रोताओं से कम से कम तीन तरीकों में भिन्न थे। मूल श्रोता हमारी तुलना में अलग ऐतिहासिक युगों में रहते थे। उनकी संस्कृतियाँ हमारे से भिन्न थीं। और वे हमारी तुलना में विभिन्न प्रकार के लोग थे। हालांकि ये तीनों अंतर अनगिनत तरीकों से आपस में जुड़े हुए हैं, इस अध्याय में हम अपना ध्यान पुराने नियम के युगों पर केंद्रित करेंगे और इस बात पर कि वे कैसे आधुनिक अनुप्रयोग को प्रभावित करते हैं।

हम दो तरीकों से आधुनिक अनुप्रयोग और पुराने नियम के युगों के बीच संबंध का पता लगाएंगे। सबसे पहले, हम पुराने नियम के इतिहास के युगांतरिक विभाजनों को देखेंगे। और दूसरा, हम उन युगांतरिक विकासों पर विचार करेंगे जिनका ये विभाजन प्रतिनिधित्व करते हैं। आइए पुराने नियम के युगांतरिक विभाजनों के साथ शुरू करते हैं।

युगांतरिक विभाजन

पुराना नियम पूरे इतिहास भर में हुए कई ईश्वरीय-ज्ञान संबंधी परिवर्तनों की सूचना देता है। जब भी परमेश्वर ने अपने लोगों की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के बारे में अपनी अपेक्षाओं में बदलाव किया, तो हर बार ईश्वरीय-ज्ञान संबंधी परिवर्तन हुआ। और जब परिवर्तन पर्याप्त मात्रा में अधिक हुए, तो वे युगांतरिक विभाजनों की पहचान करने के आधार बन गए।

मसीही लोगों ने इन परिवर्तनों को कई तरीकों से वर्णित किया है, लेकिन एक सामान्य और उपयोगी चित्रण, पुराने नियम के ईश्वरीय-ज्ञान की तुलना एक बढ़ते हुए वृक्ष से करता है। एक स्वस्थ वृक्ष

जब एक छोटे से बीज से पूर्ण परिपक्वता की ओर बढ़ता है तो वह कई परिवर्तनों से होकर गुजरता है। लेकिन संसार के अधिकांश भागों में वृक्षों का विकास वार्षिक मौसम के चक्रों से जुड़ा है। ठंडे मौसमों में वृक्ष धीरे-धीर और गर्म मौसमों में तेजी से बदलने की प्रवृति रखते हैं।

पुराने नियम के ईश्वरीय-ज्ञान का विकास भी मौसमी था। कभी-कभी यह अपेक्षाकृत थोड़ा बदला। लेकिन अन्य समयों पर यह नाटकीय रूप से बदला और परिपक्वता के नए चरणों तक पहुँच गया। परिपक्वता के ये चरण पुराने नियम के युगांतरिक विभाजनों से मेल खाते हैं। प्रत्येक युग पुराने नियम के ईश्वरीय-ज्ञान में पर्याप्त और लंबे समय तक चलने वाले परिवर्तनों द्वारा चिह्नित हुई समय की एक अवधि है।

हम तीन चरणों में पुराने नियम के युगांतरिक विभाजनों पर चर्चा करेंगे। सबसे पहले, हम उन विभिन्न तरीकों को स्वीकार करेंगे, जिनमें विद्वानों ने बाइबल में दर्ज इतिहास को विभाजित किया है। दूसरा, हम एक उपयोगी युगांतरिक रूपरेखा का वर्णन करेंगे, जिसका उपयोग कई मसीही परंपराएं करती हैं। और तीसरा, हम कुछ उन निहितार्थों की बात करेंगे जो कि इस रूपरेखा में पवित्र शास्त्र के आधुनिक अनुप्रयोग के लिए है। आइए उन विभिन्न तरीकों के साथ शुरू करते हैं जिनमें पुराने नियम का इतिहास विभाजित हुआ है।

विभिन्नता

हमें इस बात से आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए कि धर्मविज्ञानियों ने पुराने नियम में दर्ज इतिहास को विभाजित करने के विभिन्न तरीकों को खोज लिया है। एक बात यह है, कि समय तेजी से विभाजित अवधियों के अनुसार नहीं चलता है। इसलिए, युगों के बीच बदलाव आमतौर पर धीरे-धारे हुए, और स्वयं युगों ने अक्सर अधिव्यापन किया। दूसरी बात यह है कि, जो विभाजन धर्मविज्ञानी बनाते हैं, वे उनके द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले मानदंडों पर निर्भर करते हैं। उस तरीके के बारे में सोचें जैसे यह विज्ञान में होता है। पुरातत्वविद् धातु विज्ञान में विकास के अनुसार इतिहास को विभाजित करने की प्रवृति रखते हैं। इसलिए, वे शुरूआती, मध्य और बाद के कांस्य युग के बारे में बात करते हैं; और शुरूआती, मध्य और बाद का लौह युग। समाजशास्त्री राजनीतिक घटनाक्रमों पर जोर देते हैं। इसलिए, वे आदिवासी काल, शुरूआती राष्ट्रीय युग, राजशाही काल, बंधुआई का समय, और बंधुआई के बाद के समय के बारे में बात करते हैं।

इसी रीति से, धर्मविज्ञानी स्वभाविक रूप से ईश्वरीय-ज्ञान के मानदंडों का उपयोग करके युगों को चित्रित करते हैं। लेकिन फिर भी वे विभाजनों पर हमेशा सहमत नहीं होते हैं, क्योंकि पुराने नियम के अंतर्गत ईश्वरीय-ज्ञान अलग-अलग समयों पर अलग-अलग तरीकों से विकसित हुआ। जब कोई वृक्ष विकास के चरणों से गुजरता है, तो उसके विभिन्न हिस्से एक ही समय पर या एक ही गति से नहीं बढ़ते हैं। कभी-कभी बीमारी वास्तव में एक शाखा के विकास को रोक देती है जबकि अन्य आगे बढ़ जाते हैं। वृक्ष के तने की छाल धीर-धीरे और असंगत रूप से बढ़ सकती है, और तुलना में इसकी छोटी शाखाएं और पत्तियां जल्दी बढ़ सकते हैं। इसी रीति से, पुराने नियम के ईश्वरीय-ज्ञान के कुछ हिस्से धीरे-धीरे आगे बढ़े, अन्य मध्यम गति से आगे बढ़े, और अन्य तेजी से बदले। और इनमें से कई हिस्सों ने अलग-अलग समयों पर अपना विकास किया। यदि इस्राएल के विश्वास का हर पहलू उसी गति और उसी समय पर बदला होता, तो इसके विभाजन पर सहमत होना व्याख्याकारों के लिए आसान होगा। लेकिन जैसा कि यह दिखता है, धर्मविज्ञानियों ने पुराने नियम के इतिहास को कई तरीकों से विभाजित किया है।

> यह देखते हुए कि सुसमाचार एक प्रगतिशील प्रकाशन है, कि यह हमारे तक समय के साथ आया, तो यह जानना महत्वपूर्ण है कि वास्तव में हम परमेश्वर की विकसित होती योजना में कहाँ पर हैं। धर्मविज्ञानी अक्सर परमेश्वर की योजना को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> विभिन्न कालों और युगों में विभाजित करने की बात करते हैं ... हमारे पास नए नियम में कई उदाहरण हैं कि कैसे नया नियम, पुराने नियम को विभाजित करता है। आप मत्ती की वंशावली के बारे में सोचिए। यह अब्राहम से शुरू होती है, और दाऊद से होकर जाती है। इसने अब्राहम से दाऊद, दाऊद से बंधुआई, बंधुआई से मसीह के संदर्भ में पुराने नियम के इतिहास को देखा। इसके अद्वितीय महत्व को देखते हुए और फिर यह हमारे पास कैसे पहुँचता है, वह एक तरीका है जिसमें बाइबल पुराने नियम के इतिहास को विभाजित करता है। ऐसे और भी अन्य तरीकें हैं जिनमें नया नियम भी इसे विभाजित करता है। आप रोमियों 5, 1, 1 कुरिन्थियों 15 में पौलुस के बारे में सोचिए। आप व्यवस्था से पहले, व्यवस्था के बाद आदम और मसीह के बारे में बात कर सकते हैं। इसलिए, नया नियम ऐसा करने के कई तरीकों को दिखाता है। परमेश्वर की सम्पूर्ण मनसा पर मनन करने पर मैं जरूर मानता हूँ, कि एक महत्वपूर्ण तरीका जिसमें हम ऐसा कर सकते हैं, वह है बाइबल की वाचाओं के माध्यम से। यह बहुत दिलचस्प है कि जब आप आदम — सृष्टि की वाचा से होकर चलते हैं — नूह से होकर, अब्राहम से होकर — अब्राहम वाली वाचा, इस्राएल के साथ जुड़ी पुरानी वाचा — और मूसा, दाऊद वाली वाचा, और फिर नई वाचा का पूर्वानुमान, मेरा मानना है, कि यही है, परमेश्वर द्वारा दिया गया तरीका जो कि छुटकारे का इतिहास तब खोलता है जब यह एक वाचा से दूसरी वाचा तक और अंततः यीशु मसीह में अपने चरम बिंदु की ओर जाता है। यह सोचने का एक बहुत ही उपयोगी तरीका है कि हम किस तरह उत्पत्ति से मसीह तक बढ़ते हैं, कैसे परमेश्वर की पूर्ण मनसा एक साथ फिट बैठती है। और बेशक ऐसे कई तरीके हैं जिनमें नया नियम, पुराने नियम के इतिहास के लिए बात करता है, छुटकारे का इतिहास, इस वाचा वाले पैटर्न का अनुसरण करता है।
>
> — डॉ. स्टीफन जे. वेल्लम

अब जबकि हमने पुराने नियम के इतिहास के विविध युगांतरिक विभाजनों की वैधता को स्वीकार कर लिया है, तो आइए एक सहायक रूपरेखा पर विचार करें जिसे कई व्याख्याकारों ने अपनाया है।

रूपरेखा

प्रत्येक युग को परमेश्वर की एक वाचा के साथ जोड़ कर पुराने नियम के इतिहास को विभाजित करना सबसे लोकप्रिय तरीकों में से एक है। अपने लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा में हमेशा महत्वपूर्ण ईश्वरीय-ज्ञान के बदलाव शामिल हैं, और इसलिए युगों के विभाजनों के लिए ये उपयोगी सीमाओं को प्रदान करते हैं।

कई मसीही परंपराएं पुराने नियम में छह प्रमुख दिव्य वाचाओं की पहचान करती हैं: आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, और दाऊद, के साथ वाचा, और वह नई वाचा जिसकी भविष्यवाणी पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने की जो प्रतिज्ञा किए हुए देश से इस्राएल के निर्वासन के अंत में आएगी।

आदम के संबंध में, हमें ध्यान देना चाहिए कि उत्पत्ति 1–3 का अभिलेख इब्रानी शब्द *बेरित* का उपयोग नहीं करता है, जिसे हम आमतौर पर “वाचा” के रूप में अनुवादित करते हैं। फिर भी, उत्पत्ति दृढ़तापूर्वक संकेत देता है कि परमेश्वर ने आदम के साथ वाचा बाँधी। सिर्फ एक उदाहरण के रूप में,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उत्पत्ति 6:18 में, परमेश्वर ने कहा कि वह अपनी वाचा को नूह के साथ "बाँधेगा।" जिस इब्रानी क्रिया का अनुवाद "बाँधेगा" किया गया है वह *कुम* है, जिसका उपयोग किसी ऐसी चीज़ की पुष्टि करने के लिए किया गया जाता था जो पहले से मौजूद थी, बजाए इसके कि कुछ एकदम नया शुरू किया जाए। इसलिए, हम लोग आश्वस्त हो सकते हैं कि उत्पत्ति की पुस्तक ने आदम के साथ परमेश्वर के संबंधों को वाचा के रूप में प्रस्तुत किया। इसके साथ में, यह संभावना भी है कि होशे 6:7 में, भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर और आदम के बीच वाचा का उल्लेख किया, या एक वाचा जो आदम के प्रतिनिधित्व में परमेश्वर और समस्त मानव जाति के बीच बांधी गई ।

नूह के जीवन में परमेश्वर की वाचा का संकेत हमें जल-प्रलय से पहले उत्पत्ति 6:18 में, और जल-प्रलय के बाद 9:9-17 में देखने को मिलता है। इससे पहले कि अब्राहम अपनी पत्नी की दासी हाजिरा के माध्यम से एक वारिस की मांग करता, उत्पत्ति 15:18 में अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा का उल्लेख किया गया है, और 17:2 में हाजिरा के माध्यम से एक वारिस की मांग करने के बाद भी । मूसा के नेतृत्व में इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा निर्गमन 19–24 में सीनै पर्वत के तल पर दर्ज की गई है, और साहसी लेवी पीनहास के साथ उसकी निकटता से जुड़ी वाचा का उल्लेख गिनती 25:13 में है। दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा 2 शमूएल 7 और भजन 89 एवं 132 में दर्ज है। और अंत में, हम यिर्मयाह 31:31 में नई वाचा की भविष्यवाणी पाते हैं। इसी वाचा को यशायाह 54:10 और यहेजकेल 34:25 में "शांति की वाचा" भी कहा जाता है। और लूका 22:20 एवं इब्रानियों 8:6-12 जैसे अनुच्छेद हमें विश्वास दिलाते हैं कि यह वाचा मसीह में पूरी हुई है।

ये वाचाएं उन समयों को दर्शाते हैं जब परमेश्वर ने इतिहास में शक्तिशाली रूप से कार्य किया, और इन्होंने ईश्वरीय-ज्ञान वाले चिरस्थायी सिद्धांतों को प्रस्तुत किया। सृष्टि और पाप में मानवता के पतन के प्रति परमेश्वर की शुरूआती प्रतिक्रिया के संदर्भ में, परमेश्वर के साथ आदम का वाचा का संबंध बना। इसने मनुष्यों द्वारा परमेश्वर की सेवा की बुनियादों पर जोर दिया, और वर्णन किया कि कैसे पाप ने इस सेवा को जटिल बना दिया था। इसमें परमेश्वर की प्रतिज्ञा भी शामिल थी कि मानवता अंततः इस सेवा में सफल होगी।

नूह के दिनों में, संसार में मानवता के द्वारा भयावह भ्रष्टाचार ने परमेश्वर को न्याय को स्थापित करने हेतु एक बड़े जल-प्रलय को भेजने के लिए प्रेरित किया। इसमें आश्चर्य नहीं, कि नूह के साथ वाचा ने प्रकृति के स्थायी स्थायित्व को स्थापित करने के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर जोर दिया, ताकि पापी लोगों को उनके पाप को रोकने और परमेश्वर के प्रति उनकी मूल सेवा को पूरा करने का समय और अवसर मिल सके।

अब्राहम के समय में, परमेश्वर ने इस्राएल को ऐसे लोगों के रूप में चुना जो परमेश्वर की सेवा में मानवता की अगुवाई करेंगे। इसलिए, अब्राहम के साथ वाचा इस्राएल के चुनाव की ओर उन्मुख थी। इस वाचा के युग ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास करने और उसके प्रति विश्वासपात्र बने रहने के लिए इस्राएल की आवश्यकता पर जोर दिया।

परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से एक वाचा बाँधी, जब उसने इस्राएलियों को मिस्र में गुलामी से छुड़ाया और उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश के उनके मार्ग पर ले चला। आश्चर्य की बात नहीं कि, यह वाचा मूसा के संहिताबद्ध राष्ट्रिय कानून की ओर उन्मुख थी, जिसने इस्राएलियों का मार्गदर्शन तब किया जब वे परमेश्वर की अपनी सेवा में आगे बढ़े।

दाऊद के दिनों में, परमेश्वर ने दाऊद को इस्राएल के राजा के रूप में खड़ा किया। दाऊद के साथ उसकी वाचा ने दाऊद के परिवार को एक स्थायी शाही राजवंश के रूप में स्थापित किया, जो इस्राएल के शाही विस्तार का नेतृत्व करेगा। यह विस्तार परमेश्वर के प्रति इस्राएल की सेवा का एक महत्वपूर्ण पहलू था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अंत में, जब परमेश्वर ने सभी इतिहास को पूरा किया तो पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यवाणी की कि इस्राएल के बंधुआई के अंत में एक नई वाचा आएगी। मसीहा परमेश्वर के लोगों को छुड़ाएगा और संसार भर में परमेश्वर के राज्य को फैलाएगा।

परमेश्वर की प्रत्येक वाचा ने ऐसे अलग-अलग तरीकों को स्थापित किया जिनमें उसने मनुष्यों से संबंध बनाया, और प्रत्येक वाचा ने उसके विश्वासपात्र लोगों के लिए उसकी सेवा में पालन करने हेतु नए सिद्धांतों को प्रदान किया।

युगांतरिक विभाजन की हमारी चर्चा में अभी तक, हमने उन विविध तरीकों को देखा जिनमें बाइबल का इतिहास विभाजित किया गया है, और जिनमें युगों की एक सहायक रूपरेखा प्रदान की गई है। इस बिंदु पर, अब हम इस रूपरेखा में पवित्र शास्त्र के आधुनिक अनुप्रयोग के लिए कुछ निहितार्थों को देखने के लिए तैयार हैं।

निहितार्थ

पुराने नियम का युगों में विभाजन यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग अलग-अलग समयों पर अलग-अलग तरीकों में ईश्वरीय-ज्ञान के विषयों को समझें और लागू करें। और जैसे कि पुराने नियम के विश्वासियों से परमेश्वर की सेवा इस रीति से नहीं करने की अपेक्षा की गई थी जैसे कि वे इतिहास के पहले के दौर में रहते हों, उसी तरह से नए नियम के विश्वासियों को पवित्र शास्त्र को इस रीति से लागू नहीं करना चाहिए जैसे कि वे इतिहास के पहले दौर में रहते हैं।

कल्पना कीजिए कि आप एक इस्राएली है जो सुलैमान के दौर के यरूशलेम में परमेश्वर के मंदिर के बनाए जाने के कुछ ही समय बाद रह रहे हैं। आप जानते हैं कि आप दाऊद की वाचा के युग के दौरान रहते हैं। आप जानते हैं कि पहले मूसा के युग में, इस्राएल ने मूसा के मिलाप वाले तंबू में बलिदान चढ़ाया। आप यह भी जानते हैं कि आपके अपने युग में, परमेश्वर ने आपको सिर्फ मंदिर में बलिदान चढ़ाने की आज्ञा दी है। आपके ऐतिहासिक संदर्भ में, मूसा के मिलाप वाले तम्बू में बलिदान चढ़ाना परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन होगा। यही तब भी सत्य होगा यदि आप मूसा वाली वाचा के अधीन रहते और विभिन्न स्थानों पर वेदी बनाने और बलिदान चढ़ाने की ओर लौट जाते, जैसा कि अब्राहम और अन्य कुलपिताओं ने किया था। एक बार जब परमेश्वर ने आराधना में बलिदान के लिए एक नए तरीके की आज्ञा दी, तो उसने अपने लोगों से पुराने मार्गों पर कभी भी न लौटने की अपेक्षा की।

इसी तरह से, जब हम आराधना में बलिदान के पुराने नियम के आधुनिक अनुप्रयोग के बारे में सोचते हैं, तो हमें यह जानना होगा कि हम नई वाचा के युग में रहते हैं। जैसे कि नया नियम बार-बार समझता है, मसीह के एक बार-सर्वकालिक, सिद्ध बलिदान ने पहले के बलिदान के हर एक रूप का स्थान लिया है। क्रूस पर उसकी मृत्यु ने इस बात को बदला है कि परमेश्वर के विश्वासपात्र लोगों को परमेश्वर की आराधना में कैसे बलिदानों को चढ़ाना चाहिए। इसीलिए इब्रानियों के नए नियम वाले लेखक ने इतनी सख्ती से उन मसीही लोगों की निंदा की जो पुराने नियम के बलिदानों की ओर लौट जाना चाहते थे। सबसे पहले, उसने तर्क दिया कि मसीह ने यिर्मयाह 31 में भविष्यवाणी की गई नई वाचा का उद्घाटन किया है। फिर उसने कहा कि नई वाचा के आने के बाद बलिदानों की पुरानी व्यवस्था लुप्त या अप्रयुक्त होती जा रही है। इब्रानियों 8:13 में जो उसने लिखा उसे सुनिए:

> नई वाचा की स्थापना से उसने प्रथम वाचा को पुरानी ठहरा दिया; और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है (इब्रानियों 8:13)।

यहाँ, इब्रानियों के लेखक ने यूनानी शब्द *पेलाइयू* का उपयोग करते हुए कहा है कि नई वाचा के आगमन ने पुराने तरीकों को "पुराना" बना दिया है, जिसका अनुवाद "पुराना बनाना" या "अप्रचलित" भी हो सकता है।

अब, हमें सावधान होना है, क्योंकि कई अच्छे मसीही लोग इसे इस अर्थ में लेते हैं कि मसीह के अनुयायियों को पुराना नियम त्याग देना चाहिए और इसकी शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं देना चाहिए। लेकिन यह बिल्कुल भी सत्य नहीं है। स्वयं इब्रानियों की पुस्तक मसीही लोगों के लिए पुराने नियम को लागू करती है। इसका लेखक मसीही लोगों को यह नहीं बता रहा था कि पुराना नियम अप्रासंगिक था। इसके विपरीत, वह कह रहा था कि हम एक अलग युग में रहते हैं, और नई वाचा हमसे बलिदान की प्रथा को पुनः अनुकूल बनाने की अपेक्षा करती है। हम पुराने तरीकों की अनदेखी नहीं करते हैं, लेकिन हमें कभी भी परमेश्वर की सेवा ऐसे करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए जैसे कि हम अभी भी पुराने समय में रहते हों।

युद्ध में नेतृत्व का विषय एक और महत्वपूर्ण उदाहरण है। कल्पना कीजिए कि आप दाऊद के राजवंशीय वाचा के काल में रहते हैं। आप जानते हैं कि परमेश्वर ने बुराई के खिलाफ युद्ध में अपने लोगों का नेतृत्व करने के लिए इस्राएल के राजाओं को ठहराया है। राजा परमेश्वर से निर्देश पाते हैं, और बदले में वह आपको निर्देश देते है कि किस ढंग या तरीकों से आपको युद्ध में भाग लेना हैं। लेकिन अब कल्पना कीजिए कि आप व्यक्तिगत रूप से दाऊद वंशी राजा को पसंद नहीं करते, और मूसा के राष्ट्रीय कानून की वाचा में वापस जाना चाहते हैं। आप शायद गिदोन, या यहोशू जैसे किसी एप्रैमी, या स्वयं मूसा जैसे किसी लेवी को पसंद कर सकते हैं, जैसा कि आपके पूर्वजों ने किया था। लेकिन यदि आपने दाऊद के घराने के बजाय इनमें से किसी एक का अनुसरण किया, तो वह पाप होगा। आप अपने युग के लिए परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन कर रहे होंगे। आप ऐसी ही गलती कर रहे होंगे यदि आप मूसा के समय रहते लेकिन किसी आदिवासी कुलपिता का अनुसरण करना पसंद करते जैसा कि परमेश्वर के लोगों ने अब्राहम वाली वाचा के युग में किया था। हर युग में, हमें उस सैन्य नेतृत्व का पालन करने की आवश्यकता है जिसे परमेश्वर ने उस युग के लिए स्थापित किया है।

और इसमें आधुनिक मसीही लोग शामिल हैं। नई वाचा के तहत रहने वाले लोगों के रूप में, हम दाऊद के महान पुत्र, यीशु का अनुसरण करते हैं। वह परमेश्वर द्वारा ठहराया हुआ हमारा राजा है। और परमेश्वर ने उसे बुराई की ताकतों के खिलाफ युद्ध में अपने लोगों का नेतृत्व करने का विशेष अधिकार दिया है। लेकिन हम यह कैसे करते हैं? युद्ध के लिए हमारी वर्तमान रणनीति क्या है? इफिसियों 6:12 में जिस तरीके से प्रेरित पौलुस ने नई वाचा वाले युद्ध को समझाया उसे सुनिए:

> क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं (इफिसियों 6:12)।

यह पहले वाले युगों की रणनीति से एकदम अलग है, जब मूसा और दाऊद जैसे अगुवों ने शारीरिक मांस और लहू वाले युद्धों में परमेश्वर के लोगों का नेतृत्व किया। वहाँ पर भी आत्मिक लड़ाइयाँ थीं, लेकिन इन अगुवों ने परमेश्वर की आत्मिक सेनाओं का नेतृत्व नहीं किया था। इसके विपरीत, यीशु कलीसिया का नेतृत्व शारीरिक लड़ाइयों में नहीं करता है। लेकिन वह आत्मिक युद्ध में जरूर हमारा नेतृत्व करता है, और यदि हम इस रणनीतिक बदलाव की अनदेखी करते हैं, तो हम परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करते हैं।

> नया नियम, पुराने नियम की लड़ाइयों और युद्धों को मुख्य रूप से परमेश्वर और शैतान के बीच और परमेश्वर के लोगों और परमेश्वर की योजना को नष्ट करने की कोशिश में लगे शैतान के बीच बहुत बड़े पैमाने पर होने वाली लड़ाई के रूप में

देखता है। यदि आप इफिसियों 6 के बारे में सोचते हैं, कि आपकी लड़ाई शैतान की दुष्ट ताकतों के खिलाफ है और कि मसीही लोगों को इस युद्ध में दृढ़ता से बने रहने में सक्षम होने के लिए परमेश्वर के सभी हथियारों को धारण करना चाहिए, तो फिर यह आजकल के मसीहों के लिए भी लागू होता है जो कि एक तरह से उसी लड़ाई का हिस्सा हैं।

— डॉ. पी. जे. बायज़

नए नियम के लेखक आत्मिक एवं राष्ट्रीय युद्ध के पुराने नियम के चित्रण को लेते हैं और वास्तव में कुछ विशेष तरीकों में उसको रूपांतरित करते हैं और जैसा कि आज लोग जिस प्रचलित रीति से समझ रहे होते उसकी तुलना में इसे एक बहुत ही अलग दिशा में लागू करते हैं। सबसे पहले, मसीह आत्मिक युद्ध लड़ने आया था। यूहन्ना 1 हमें बताता है, वह अंधकार पर विजय प्राप्त करने आया था। समस्या यह नहीं थी कि अंधकार उसे ग्रहण नहीं कर रहा था बल्कि उस पर विजय पाने की कोशिश कर रहा था, और वह अंधकार के खिलाफ युद्ध करता है — हम इसे विशेष रूप से यूहन्ना के सुसमाचार में देखते हैं। और इस तरह, मसीह इस संसार के हाकिम, यानी शैतान के खिलाफ लड़ने वाले दिव्य योद्धा के रूप में आता है। वास्तव में, यूहन्ना 12 में यीशु कहता है कि उसकी महिमा की घड़ी अब आ गई है, जो कि उसके क्रूस का समय है, और वह कहता है कि उस समय इस संसार के हाकिम को निकाल दिया जाएगा ... इसलिए जब पौलुस कहता है कि हमारे युद्ध के हथियार परमेश्वर का वचन और प्रार्थना और विश्वास आदि हैं, जैसा कि वह इफिसियों 6 में यह कहते हुए करता है, यह अब भूराजनीतिक, राष्ट्रीय युद्ध नहीं है, कि मसीही लोगों को जिस तरह से वे युद्ध को समझते हैं उसमें राष्ट्रवादी नहीं होना चाहिए ... वहाँ तलवार और वहाँ क्रूस है, और मनुष्यों के रूप में हमारी प्रवृति होती है कि क्रूस को छोड़ दें और तलवार को उठा लें। लेकिन यीशु ने कहा कि कोई भी मेरा शिष्य नहीं हो सकता जब तक कि वह अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे न हो ले। इसलिए जिस तरह से हम आज आत्मिक युद्ध लड़ते हैं वह आत्म-बलिदान, आत्म-त्याग वाले प्रेम के द्वारा होता है जिसे यीशु ने क्रूस से और अपने संपूर्ण सांसारिक जीवन और सेवकाई से प्रदर्शित किया।

— रेव्ह. माइक ग्लोडो

परमेश्वर ने हमेशा अपने लोगों से अपेक्षा की है कि वे उस तरीकों से उसकी सेवा करें जो उस वाचा वाले युग के लिए उपयुक्त थे, जिनमें वे रहते थे। इसलिए, यह समझना कि पुराने नियम का इतिहास प्रमुख वाचा वाले युगों में कैसे विभाजित हुआ है, हमारे समय में पवित्र शास्त्र को लागू करने के लिए आवश्यक है। घड़ी को वापस घुमाने के बजाय, जैसे कि परमेश्वर ने इतिहास को आगे नहीं बढ़ाया है, हमें हर उस ईश्वरीय-ज्ञान के विषय का पता लगाना होगा जो हर वाचा के युग से होते हुए मसीह में नई वाचा तक विकसित हुए हैं।

अब जबकि हमने आधुनिक अनुप्रयोग और पुराने नियम के युगांतरिक विभाजनों के संदर्भ में पुराने नियम के युगों पर विचार कर लिया है, आइए उन तरीकों का पता लगाएं जिनमें युगांतरिक विकासों को आधुनिक अनुप्रयोग को प्रेरित करना चाहिए।

युगांतरिक विकास

युगांतरिक विकासों की अवधारणा को समझने के लिए, आइए एक बार फिर से बढ़ते वृक्ष के बारे में सोचें। इस बार, कल्पना कीजिए कि आपके पास एक बीज का चित्र है, और उस बीज से उगाए गए वृक्ष का चित्र है। बीज और वृक्ष इतने अलग दिखते हैं कि यह विश्वास करना मुश्किल है कि वे अलग-अलग समयों पर एक ही चीज़ हैं। लेकिन वे हैं। वे विकास के अलग-अलग चरणों में एक ही जीव हैं। यहाँ तक कि यह साबित करने के लिए उनके डीएनए में समान आनुवंशिक संरचनाएं हैं।

इसी रीति से, पहले और बाद के पुराने नियम के युगों में उनके बीच अनगिनत ईश्वरीय-ज्ञान संबंधी अंतर हैं। लेकिन यदि हम उनकी अंतर्निहित ईश्वरीय-ज्ञान संबंधी संरचनाओं के बारे में सीखते हैं, यानी उनका डीएनए जैसा कि वे थे, तो हमें पता चलता है कि ये ईश्वरीय-ज्ञान संबंधी बदलाव वास्तव में एक अकेले बढ़ते विश्वास के जैविक विकास को दर्शाते हैं।

हम चार भागों में पुराने नियम के युगांतरिक विकासों का पता लगाएंगे। सबसे पहले, हम देखेंगे कि इन विकासों के पीछे दो प्रमुख पात्र बाइबल के पूरे इतिहास में लगातार बने हुए हैं। दूसरा, हम देखेंगे कि प्रत्येक युग दूसरों के साथ एक एकीकृत कहानी में जुड़ा है। तीसरा, पुराने नियम के लेखकों ने स्वयं अक्सर बाद के श्रोताओं के लिए पहले वाले युगों को लागू किया। और चौथा, हम उन युगों के बीच कुछ ऐसे संबंधों को उजागर करेंगे जिन पर पुराने नियम के लेखकों ने इन अनुप्रयोगों को बनाने के लिए सहारा लिया। आइए बाइबल के इतिहास के मुख्य पात्रों के साथ शुरू करते हैं।

पात्र

पवित्र शास्त्र में दर्ज पूरे इतिहास में, अच्छाई की ताकतों और बुराई की ताकतों के बीच महान संघर्ष में वही पात्र लड़ रहे हैं।

साहित्यिक संदर्भ में, हम कह सकते हैं कि अच्छाई की शक्तियों का नेतृत्व कहानी के नायक या हीरो द्वारा किया जाता है, अर्थात स्वयं परमेश्वर। और बुराई की ताकतों का नेतृत्व विरोधी या खलनायक द्वारा किया जाता है, सर्वोच्च रीति से दुष्ट प्राणी शैतान, जो परमेश्वर को उसके उद्देश्य को पूरा करने से रोकने की कोशिश करता है। शैतान बहुत शक्तिशाली और धूर्त है। लेकिन फिर भी वह सृष्टिकर्ता के संप्रभुत्व वाले नियंत्रण के अधीन एक प्राणी है। जबकि दिव्य नाटक चल रहा है, फिर भी परमेश्वर ने शैतान को उसके खिलाफ खड़े होने की अनुमति दी है।

परमेश्वर सर्वोच्च सृष्टिकर्ता-राजा है जो अपने स्वर्गीय सिंहासन से राज्य करता है और अपने स्वर्गीय महल को अपने तेजस्वी महिमा से भरता है। स्वर्ग में उसकी सेवा करने वाले प्राणी पहले से ही उसका सम्मान करते हैं। लेकिन परमेश्वर ने हमेशा से पृथ्वी भर में अपनी महिमा को फैलाने के द्वारा अपने सम्मान को बढ़ाने का दृढ़ संकल्प किया है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए, परमेश्वर ने अपने राज्य को पृथ्वी तक फैलाने की योजना बनाई, ताकि पृथ्वी स्वर्ग जैसी बन जाए। जब ऐसा होता है, तो पृथ्वी के ऊपर, उस पर और नीचे रहने वाले हर एक प्राणी उसको सनातन आराधना और स्तुति प्रदान करेंगे। परमेश्वर असंख्य आत्माओं को नियोजित करता है जो इस लक्ष्य की ओर काम करते हैं। लेकिन उसने मानवता को, जो उसका पृथ्वी वाला स्वरूप है, पृथ्वी को भरने और उसे वश में करने का सम्मान दिया है। पूरे बाइबल में, हम परमेश्वर के प्रतिनिधि हैं, जो उसकी महिमा के अंतिम निर्णायक प्रदर्शन के लिए पृथ्वी को तैयार कर रहे हैं।

संघर्ष के दूसरी ओर, परमेश्वर के लिए पृथ्वी को भरने और वश में करने से मानवता को रोकने की कोशिश करने के द्वारा शैतान परमेश्वर की महिमा के फैलाव का विरोध करता है। पूरे संसार भर में परमेश्वर के राज्य के फैलाव का विरोध करने के लिए, शैतान कई आत्माओं और मनुष्यों को परमेश्वर के खिलाफ

विद्रोह में, और परमेश्वर के आत्मिक और मानवीय सेवकों के साथ संघर्ष में अगुवाई करता है। वह विभिन्न साधनों के माध्यम से अपने अभियान में मानवीय सहयोगियों को जीतता है जिनमें झूठ, धोखा, झूठे धर्म सहित पाप में पतित मानवता की पापी अभिलाषाओं के लिए अपील करना शामिल है।

> हर महान कहानी में एक नायक होता है, और कोई ऐसा व्यक्ति होता है जो उस नायक के खिलाफ खड़ा होता है। एक नायक होता है, जो कहानी का प्रमुख पात्र है, और खलनायक जो उस पात्र के खिलाफ ख़ड़ा होता है। और बाइबल सभी कहानियों में सबसे महान है, और इसलिए यह देखना आश्चर्यजनक नहीं है, जब आप पुराने नियम से होकर पढ़ते है, तो वहाँ एक युद्ध है जो परमेश्वर एवं उसके प्रतिज्ञा किए हुए मसीहा और उस शैतान के बीच जारी है जो उस मसीहा को कभी भी आने से रोकने के लिए वह सब कुछ करने की कोशिश कर रहा है जो वह कर सकता है। इसलिए, अदन की वाटिका में पहले ही जब परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की कि स्त्री से एक बीज उत्पन्न होगा जो शैतान का सिर कुचलेगा, उस समय से हर मोड़ पर आप शैतान को परमेश्वर का विरोध करते हुए देखते हैं। और स्पष्ट रीति से, यहाँ तक कि जब एक छोटा बालक होता है, कई बार शैतान उस छोटे बालक की जान लेने की कोशिश कर रहा है, या जब परमेश्वर के लोग बढ़ रहे हैं तो वह उन्हें गुलामी में ले जाने और उन्हें कुचल डालने की कोशिश करता है। आप देखते हैं कि इस कहानी ने पूरे पुराने नियम से होकर बार-बार एवं बार-बार प्रदर्शन किया।
>
> — डॉ. फिलिप्प रायकेन

> पुराने नियम के इतिहास के कथानक में, शुरूआत से ही, परमेश्वर नायक है और शैतान खलनायक है। आप देखते हैं कि वाटिका में शुरूआत से ही, क्योंकि यह शैतान ही है जो आता है और आदम और हव्वा को बहकाता है, लेकिन वह उन्हें परमेश्वर के खिलाफ होने के लिए बहकाता है ... और फिर निश्चित रूप से पतन के बाद, हमें इस चल रहे संघर्ष का उल्लेख मिलता है जो बाकी के पूरे पुराने नियम में होने वाला है, और निश्चित रूप से नए नियम में वह सर्प के बीज और स्त्री, हव्वा के बीज के बीच में है। और निश्चित रूप से यह अंततः मसीह में अपनी पूर्ति में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है, जो शैतान को लज्जित करता और निर्णायक रीति से सदा के लिए उसे हरा देता है ... और मैं सोचता हूँ कि फिर आप उसे देखते हैं जो सर्प के बीज के रूप में बार-बार पुराने नियम में आता है, जिसकी कल्पना मैं सोचता हूँ कि हम परमेश्वर के शत्रुओं के रूप में कर सकते हैं, जो निरंतर परमेश्वर का विरोध करते, उसके लोगों का विरोध करते, उसके लोगों के साथ युद्ध करते, उसके लोगों को सताते हैं, और इस तरह आप इसे शुरू से अंत तक देखते हैं। और इस तरह आप जानते हैं, कि जब आपके पास इस्राएल है, सिर्फ एक उदाहरण के लिए, कहिए, वह सताया जाता और कहिए वह पलिश्तियों के साथ युद्ध में है, तो यह सिर्फ इस्राएल बनाम पलिश्ती न होकर उससे बहुत अधिक है। मैं सोचता हूँ कि इसके पीछे, इसकी पृष्ठभूमि में, परमेश्वर और शैतान के बीच एक तरह का निरंतर जारी रहने वाला युद्ध है।
>
> — डॉ. ब्रायन जे. विकर्स

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि आधुनिक मसीही लोग परमेश्वर और शैतान के बीच इस संघर्ष के महत्व को अक्सर भूल जाते हैं। हम में से कई लोग बहुत कम जागरुकता के साथ बाइबल को पढ़ते है कि कैसे अनुभाविक संसार परमेश्वर एवं उन आत्माओं के द्वारा प्रभावित किया जाता है जो उसकी सेवा करते हैं, और साथ में शैतान और उन आत्माओं द्वारा जो उसकी सेवा करते हैं। लेकिन पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं की यह समस्या नहीं थी। वे पहले ही से आत्मिक और अनुभाविक वास्तविकताओं के बीच गतिशील अंतर्संबंधों को समझते थे। वास्तव में, प्राचीन संसार में यह विश्वास इतना आम था कि पवित्र शास्त्र के लेखकों ने कभी भी इसका पूरा विवरण प्रदान करने की आवश्यकता महसूस नहीं की। इसलिए, आधुनिक लोगों के रूप में, यदि हम इस आत्मिक संघर्ष के संदर्भ में पवित्र शास्त्र के नाटक को देखना शुरू करते हैं, तो हमें पता चलेगा कि बाइबल के मूल श्रोताओं को पहले से ही क्या पता था: यह संघर्ष उस हर बात को रेखांकित करता है जो बाइबल कहती है।

पवित्र शास्त्र के मुख्य पात्रों को ध्यान में रखते हुए, आइए पुराने नियम के युगांतरिक विकासों के दूसरे पहलू की बात करते हैं: बाइबल की अंतर्निहित कहानी।

कहानी

वाचा वाले युगों के बीच अनगिनत भिन्नताओं के बावजूद, ये सभी भिन्नताएँ परमेश्वर और शैतान के बीच संघर्ष के बारे में एक एकीकृत और सब कुछ को शामिल करने वाले वृतांत में फिट बैठते हैं। सुविधा के लिए, हम पवित्र शास्त्र के वाचा वाले युगों को बाइबल की कहानी में मुख्य अध्यायों के रूप में देखेंगे, जिनमें अनंत प्रशंसा प्राप्त करने के लिए परमेश्वर अपनी महिमा फैला रहा है।

नाटक पहले अध्याय में शुरू होता है, आदम का युग। इस अध्याय की शुरूआत में, परमेश्वर ने पहले मनुष्यों को एक ऐसे स्थान में रखा, जहाँ उसकी दृश्यमान महिमा शुरू में पृथ्वी पर दिखाई दी: अर्थात अदन की वाटिका, जो उसके पवित्र महल के रूप में कार्य करता था। सृष्टि करने के अपने उद्देश्य के अनुसार, परमेश्वर ने पृथ्वी को भरने एवं वश में करने के द्वारा अपने पवित्र वाटिका की सीमाओं का विस्तार करने का कार्यभार आदम और हव्वा को दिया। लक्ष्य था कि पृथ्वी को परमेश्वर के लिए उपयुक्त स्थान में बदलना ताकि वह अपनी दृश्यमान महिमामय उपस्थिति को प्रकट करे।

बेशक, शैतान ने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह में पहले मनुष्यों का नेतृत्व करने के द्वारा इस योजना का विरोध किया। और जवाब में, परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को श्राप दिया और मानवता के कार्य को कठिन बना दिया। उसने यह भी घोषणा की कि मानवता इस बिंदु से विरोधी गुटों में विभाजित होगी: स्त्री के बीज में वे लोग शामिल होंगे जो परमेश्वर के उद्देश्यों को कार्यरत करेंगे, और सर्प के बीज में वे लोग शामिल होंगे जो शैतान के विद्रोह के साथ जुड़ेंगे। इसी समय पर, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि स्त्री का बीज अंततः शैतान और उसके बीज पर विजयी होगा।

पुराने नियम के शेष वाचा वाले युग बाइबल की कहानी के मुख्य भाग को बनाते हैं।

दूसरे अध्याय में, नूह वाली वाचा का युग में, परमेश्वर ने पृथ्वी को उस भयानक हिंसा से साफ किया जो मानवता ने शैतान का अनुसरण करते हुए की थी। उसने स्त्री के बीज के अवशेष, नूह और उसके परिवार को भी बचाया, और एक स्थिर संसार की स्थापना की जिसमें मनुष्यों को जब वे पृथ्वी को भरते एवं वश में करते हैं तो आगे की भ्रष्टता का विरोध करने को कहा गया था।

तीसरे अध्याय में, अब्राहम वाली वाचा के युग में, परमेश्वर ने स्त्री के बीज के रूप में अब्राहम के परिवार को चुना जो शैतान और उसके अनुयायियों के साथ संघर्ष में मानवता का नेतृत्व करेंगे। परमेश्वर ने अब्राहम के वंशजों को बढ़ाने और उन्हें कनान देश देने की प्रतिज्ञा की। उस भौगोलिक शुरूआती बिंदु से, वे अंततः परमेश्वर और उसकी योजना के सभी विरोध पर जय प्राप्त करेंगे। वे समस्त पृथ्वी के वारिस होंगे, और परमेश्वर की आशीषों को मानव जाति के हर एक परिवार में फैलाएंगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

चौथे अध्याय में, मूसा वाली वाचा के युग में, परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्रवासियों और उनके शैतानी देवताओं पर एक महान विजय दी। उसने इस्राएल को एक राष्ट्र के रूप में गठित किया, अपने कानून द्वारा शासित किया, और उन्हें कनानियों को दूर करने की आज्ञा दी। जब इस्राएली कनान में दाखिल हुए, तो परमेश्वर ने उन्हें कनानियों और उन शैतानी आत्माओं पर विजय दिलाई जिनकी वे सेवा करते थे। उसने इस्राएलियों को देश में स्थापित और समृद्ध किया, और उन्हें पृथ्वी भर में परमेश्वर के राज्य को फैलाने के अपने अंतिम निर्णायक लक्ष्य की ओर ले गया।

पाँचवें अध्याय में, दाऊद वाली वाचा के युग में, दाऊद के परिवार को परमेश्वर के लोगों के ऊपर राज करने, और शैतान की सेवा करने वाले राष्ट्रों के साथ आगे के संघर्ष में नेतृत्व करने के लिए ठहराया गया था। दाऊद का वंश कनान में सुरक्षा ले कर आया और संसार के लिए परमेश्वर की योजना को कार्यरत करने में इस्राएल की सीमाओं का विस्तार करना जारी रखा। दुःख की बात यह है कि समय के साथ इस्राएल के राजाओं ने परमेश्वर के खिलाफ खुल्लमखुल्ला इस हद तक विद्रोह किया, कि परमेश्वर ने उनके साम्राज्य को नष्ट कर दिया और उन्हें बंधुवाई में भेज दिया। बंधुवाई के दौरान, उन्हें विदेशी साम्राज्यों और उनके देवताओं के अत्याचार का सामना करना पड़ा। आखिरकार, परमेश्वर ने बंधुवाई को समाप्त करने की पेशकश की और प्रतिज्ञा किए हुए देश में थोड़े से बचे हुए लोगों को लौटाया ताकि वे कनान में राज्य को फिर से स्थापित करने की कोशिश कर सकें। लेकिन यहाँ तक कि वे बचे हुए लोग भी विश्वासपात्र बने रहने में विफल रहे, इसलिए दुष्ट के अत्याचार के तहत बंधुवाई जारी रही।

पुराने नियम में उल्लेखित अंतिम अध्याय वह अंतिम निर्णायक नई वाचा है जिसे परमेश्वर ने कहा कि वह तब स्थापित करेगा जब इस्राएल के बचे हुए लोग पश्चाताप करेंगे और दाऊद का महान पुत्र, मसीहा या ख्रीष्ट, उनके पापों के लिए प्रायश्चित करेगा। शैतान, दुष्ट आत्माओं और उनकी सेवा करने वाले देशों पर अंतिम निर्णायक जीत में मसीह इस्राएल का नेतृत्व करेगा। वह शैतान को कुचल डालेगा और उसके पीछे चलने वाले सभी लोगों का न्याय करेगा। अंत में, मसीह परमेश्वर के लोगों के साथ पृथ्वी पर राज्य करते हुए, सभी चीज़ों को नया बना देगा। परमेश्वर की महिमा सृष्टि को भर देगी, और सभी प्राणी अनंत काल तक उसकी प्रशंसा करेंगे।

बाइबल की कहानी का यह सारांश हमें दिखाता है कि पुराने नियम के वाचा वाले युगों के बीच मतभेदों के बावजूद, ये युग एक दूसरे पर एक लंबी कहानी के अध्यायों के समान निर्मित होते हैं। विरोधाभास, विस्थापन, या यहाँ तक कि एक दूसरे को रद्द करने की बजाय, इतिहास के ये प्रत्येक चरण पवित्र शास्त्र की विकासशील, एकीकृत कहानी में संचयी रूप से योगदान देते हैं।

अभी तक, हमने पुराने नियम के युगांतरिक विकासों की पृष्ठभूमि में मुख्य पात्रों पर विचार किया है, और दिखाया कि प्रत्येक युग एक एकीकृत कहानी में दूसरों से जुड़ा हुआ है। अब हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि पुराने नियम के लेखकों ने बाद के श्रोताओं के लिए अक्सर पहले वाले युगों को लागू किया।

लेखक

आपको याद होगा कि इस अध्याय के आरंभ में, हमने यह कहते हुए पुराने नियम के अनुप्रयोग को सारांशित किया: "कभी भी अतीत में नहीं लौटना चाहिए, लेकिन अतीत को कभी भूलना भी नहीं चाहिए।" हम अतीत में नहीं रहते हैं, इसलिए हमें ऐसे सोचना, व्यवहार करना या महसूस नहीं करना चाहिए जैसे कि हम पहले के समयों में रहते थे। लेकिन हम ऐसी कहानी के हिस्सा है जिसमें अतीत शामिल है। और पुराने नियम के लेखक इसे अच्छी तरह से जानते थे। उन्होंने स्वीकार किया कि एक सच्चा परमेश्वर समय के साथ स्वयं को एक सच्चे धर्म के माध्यम से प्रकट करता रहा था। और इसका अर्थ यह था कि अतीत में जो चीज़ें परमेश्वर ने कही और करी थीं वे हर समय उसके लोगों का मार्गदर्शन करना

जारी रखेंगी। इसके प्रकाश में, पुराने नियम के लेखकों ने नियमित रूप से अतीत से सीखीं गई उन बात को लिया, और उसे अपने दिनों में लागू किया। इस बारे में इस तरह से सोचें: पुराने नियम में वाचा वाले छह प्रमुख युगों का उल्लेख है। लेकिन तीन बहुत पहले वाले युगों के बारे में हमारी सारी जानकारी — आदम, नूह, और अब्राहम के समय —बाइबल की उन पुस्तकों से आती हैं जो मूसा, दाऊद और नई वाचा वाले बाद के युगों में लिखी गई थी।

हम दो आम पहलूओं पर विचार करेंगे जिन्हें पुराने नियम के लेखकों ने अपने लेखनकार्यों में शामिल किया था जो युगांतरिक विकासों की उनकी समझ को प्रकट करते थे। सबसे पहले, हम देखेंगे कि पुराने नियम के लेखकों ने अतीत के बारे में लिखा। और दूसरा, हम देखेंगे कि उन्होंने वर्तमान के लिए लिखा। अर्थात, उन्होंने उन श्रोताओं के लिए लिखा जो उनके दिनों में, स्वयं उनके वर्तमान में रहते थे। आइए पहले देखे कि पुराने नियम के लेखकों ने अतीत के बारे में लिखा।

अतीत के बारे में

पुराने नियम की सभी पुस्तकें स्पष्ट रूप से अतीत से संबंधित हैं। पेन्टाटयूक पर विचार करें — उत्पत्ति, निर्गमन. लैव्यवस्था, गिनती, और व्यवस्थाविवरण की पुस्तकें। मूसा ने इन सभी पुस्तकों को अपने वाचा वाले युग में लिखा। लेकिन उत्पत्ति में उसने आदम, नूह और अब्राहम के वाचा वाले युगों के दौरान, उन घटनाओं की जानकारी दी जो सुदूर अतीत में हुई थीं। निर्गमन, लैव्यवस्था, गिनती, और व्यवस्थाविवरण की पुस्तकों में, वह इतिहास में पीछे उतनी दूर नहीं गया। लेकिन वहाँ पर भी उसने उन घटनाओं पर ध्यान-केंद्रित किया जो उन पुस्तकों के लिखे जाने से पहले हुई थीं।

बाकी की पुराने नियम की पुस्तकें दाऊद वाले वाचा के युग में लिखी गई थीं। और वे भी अपने श्रोताओं को अतीत में ले गए। उदाहरण के लिए, अय्युब की पुस्तक को दाऊद वाले युग के राजशाही काल के दौरान लिखे जाने की सबसे अधिक संभावना थी। लेकिन यह उन घटनाओं की रिपोर्ट करता है जो राजशाही से बहुत पहले, अब्राहम वाले युग में हुई थीं। यहोशू, न्यायियों, और रूत की पुस्तकें दाऊद वाली वाचा के युग में लिखी गई थीं, लेकिन उन्होंने उन घटनाओं को बताया जो दाऊद के राजा बनने से पहले मूसा वाले युग के अंत में घटित हुई थीं। शमूएल, राजाओं, इतिहास, एज्रा, नहेम्याह, और एस्तेर की पुस्तकों ने मुख्य रूप से अतीत में हाल की घटनाओं के लिए अपने श्रोताओं को संदर्भित किया। यही यशायाह से मलाकी तक की पुराने नियम की सभी भविष्यद्वक्ताओं वाली पुस्तकों के लिए भी सच है। भविष्यद्वक्ताओं ने पहले उपदेशों और कार्यों के माध्यम से सेवकाई की, और सिर्फ बाद में अपने समकालीन श्रोताओं का विस्तार करने के लिए अपनी सेवकाई को रिकॉर्ड किया। इस तरह, उनकी पुस्तकें बहुत हद तक भविष्यवाणी वाले कार्यों और उपदेशों के लिखित रिकॉर्ड थे जो पहले ही किए जा चुके थे। बहुत कुछ इसी तरह, नीतिवचन, श्रेष्ठगीत, और सबोपदेशक भी हाल के अतीत पर ईश्वरीय-ज्ञान के चिंतन थे।

अब जबकि हम समझ गए हैं कि पुराने नियम के लेखकों ने अतीत के बारे में लिखा था, आइए इस तथ्य पर ध्यान दें कि उन्होंने वर्तमान के लिए लिखा, अर्थात, स्वयं अपने समकालीन श्रोताओं के लिए

वर्तमान के लिए

> जब बाइबल के लेखकों ने पवित्र शास्त्र लिखना शुरू किया ... तो उन्होंने पाठकों, अपने लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए लिखा। और उन्होंने ऐसे ही बैठ कर और सिर्फ लिखने की इच्छा होने के कारण ही नहीं लिखा। इसके बजाय, उन्होंने अपने लोगों के शिक्षण, मार्गदर्शन और संरचना की आवश्यकता को पूरा करने के लिए लिखा। इस कारण से, प्रत्येक पुस्तक के पीछे एक अभिप्रेत उद्देश्य था। प्रेरणा सिर्फ "बैठ जाओ और लिखो" का मुद्दा नहीं था। नहीं, मुद्दा था कि

वहाँ एक आवश्यकता थी — "उठो और लिखो।" इसलिए प्रत्येक लेखक ने उस तरीके से जानकारी प्रदान करने के लिए अपने लोगों की आवश्यकता को ध्यान में रखा जिसे लोग समझ सकते थे।

— डॉ. घासन खालफ, अनुवादित

पवित्र शास्त्र के लेखकों ने उन श्रोताओं की परिस्थितियों पर बारीकी से ध्यान दिया जिनके लिए वे लिख रहे थे। हम हद से अधिक वहाँ नहीं जाना चाहते हैं। हम यह कहना नहीं चाहते हैं कि वे मूल परिस्थितियों के लिए इतने अनुकूलित हैं कि बाद के पाठकों के लिए उनके कोई मायने नहीं हो सकते। हम इसे रोमियों 15:4 जैसे पदों से जानते हैं जहाँ पौलुस कहता है कि जो कुछ भी लिखा गया था वह हमारे प्रोत्साहन के लिए लिखा गया था। और फिर भी, पवित्र शास्त्र के लेखकों ने जिनके लिए वे लिख रहे थे, उन लोगों के जीवनों में जो चल रहा था उस पर सावधानीपूर्वक ध्यान दिया ... उदाहरण के लिए, उत्पत्ति, ऐसे लोगों के समूह के लिखी गई है जिन्होंने अभी-अभी मिस्र छोड़ा था। उन्होंने अभी-अभी पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली साम्राज्य को क्रोधित कर दिया था। वे उस देश में जाने के लिए तैयार हो रहे हैं जहाँ उन्हें अन्य शत्रुओं से युद्ध करना होगा। उन्हें यह जानने की आवश्यकता है कि उन्हें किसी भी चीज़ से डरना नहीं है, और इसलिए उत्पत्ति की पुस्तक ऐसे परमेश्वर की तस्वीर के साथ शुरू होती है जिसने सब कुछ बनाया, जिसके नियंत्रण में सभी देश हैं, जिसमें कुलपिताओं से प्रतिज्ञा की और उन प्रतिज्ञाओं को निभा रहा है। इस्राएल को डरने की आवश्यकता नहीं है ... इसलिए एक बार जब हम मूल श्रोताओं की परिस्थिति को जान जाते हैं, तो यह वास्तव में हमें, न सिर्फ यह देखने में मदद करता है कि पवित्र शास्त्र क्या कहता है बल्कि यह भी कि वह ऐसा क्यों कहता है। और फिर हम ऐसे प्रश्नों को पूछने की शुरूआत कर सकते हैं, हम कहाँ पर मिस्र से निकलने बाद रेगिस्तान में इस्राएल जैसी परिस्थिति का सामना कर रहे हैं? ... और हम यह देखना शुरू करते हैं कि वह एक चरवाहे के रूप में कैसे अपने लोगों की देखभाल करता है और हमारी आवश्यकताओं के लिए करुणा दिखाता है।

— डॉ. जिम्मी ऐगन

पवित्र शास्त्र के लेखकों ने यह समझ लिया था कि अतीत बाइबल वाले विश्वास के जैविक विकास में पहले के चरणों का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन उन्हें सबसे पहले और प्रमुखता से उन श्रोताओं की सेवा करने के लिए बुलाया गया था जो उनके समय में रहते थे। इसलिए, उन्होंने उन तरीकों में अतीत के बारे में लिखा जिनके द्वारा उनके मूल श्रोताओं के जीवनों से उनका संबंध बना। उन्होंने उन तरीकों में ऐतिहासिक लोगों, कार्यों, वचनों, संस्थानों इत्यादि पर प्रकाश डाला जिन्होंने इन ऐतिहासिक विषयों को उनके श्रोताओं के जीवनों से जोड़ा। अधिकांश भाग के लिए, पुराने नियम की पुस्तकों के मूल श्रोता उन साहित्यिक विधियों से परिचित थे जिनका अनुसरण बाइबल के लेखकों ने इन संबंधों को बनाने के लिए किया था। इसलिए, लेखकों ने आमतौर पर इन संबंधों को समझाने का कष्ट नहीं किया। अन्य समयों पर, लेखकों ने छोटे सुराग प्रदान किए जो अतीत और वर्तमान के बीच संबंधों की ओर संकेत करते थे। और फिर अन्य और अनुच्छेदों में, बाइबल के लेखकों ने अपने श्रोताओं की सहायता करने के लिए, कि अतीत उन पर कैसे लागू होता है, प्रत्यक्ष स्पष्टीकरण देने की पेशकश की।

जैसे कि पुराने नियम के लेखकों ने अतीत को स्वयं अपने वर्तमान से जोड़ने के तरीकों को खोजा, वैसे ही आधुनिक मसीही लोगों को अतीत के बारे में उन लेखनों से स्वयं को जोड़ने की आवश्यकता है। हाँ, आधुनिक अनुप्रयोग इस बात से मतलब रखता है कि हमारे समय में क्या हो रहा है। लेकिन यह हमेशा अतीत के तरीकों पर आधारित होता है।

आधुनिक संसार में रहने वाले परमेश्वर के लोगों के रूप में, हमारा विश्वास गहनता से उस बात से जुड़ा हुआ है जो परमेश्वर ने बहुत पहले प्रकट किया। हम पुराने नियम की पुस्तकों के आधुनिक अनुप्रयोग के लिए समर्पित हैं जो अतीत के साथ कार्य करते हैं। और यहाँ तक कि जब हम नए नियम की पुस्तकों को लागू कर रहे हैं तब भी हम अतीत की ओर देख रहे हैं। अब, प्रकाशितवाक्य जैसी पुस्तकें भविष्य पर काफी ध्यान केंद्रित करती हैं। लेकिन यहाँ तक कि प्रकाशितवाक्य भी ऐसे दर्शनों का रिकॉर्ड है जिन्हें इनके लेखक यूहन्ना ने अतीत में अपने मूल श्रोताओं के लिए लागू किया था। एक या अन्य तरह से, पवित्र शास्त्र की हर एक पुस्तक उस बात पर ध्यान-केंद्रित करती है जिसे परमेश्वर ने अतीत में किया। इसलिए, आधुनिक संसार में उन पुस्तकों को लागू करने के लिए, हमें भी, अतीत पर ध्यान-केंद्रित करना होगा।

अभी तक, युगांतरिक विकासों की हमारी चर्चा ने पुराने नियम के युगांतरिक विकासों के पीछे मुख्य पात्रों, पवित्र शास्त्र की एकीकृत कहानी, और इस तथ्य को देख लिया है कि पुराने नियम के लेखकों ने अपने समकालीन श्रोताओं के लिए पहले के युगों को लागू किया। इसलिए, अब हम संबंधों के उन प्रकारों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए तैयार हैं जिन्हें बाइबल के लेखकों ने अतीत और वर्तमान के बीच बनाए।

संबंध

हम तीन प्रकारों के संबंधों की बात करेंगे जिन्हें बाइबल के लेखकों ने अतीत और वर्तमान के बीच बनाया। सबसे पहले, उन्होंने अपने श्रोताओं को उनके विश्वास के विभिन्न आयामों के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों को प्रदान किया। दूसरा, उन्होंने अपने श्रोताओं के अनुसरण करने और अस्वीकार करने हेतु मॉडल प्रस्तुत किए। और तीसरा, उन्होंने अपने श्रोताओं के अनुभवों के लिए पूर्वानुमानों को प्रदान किया। आइए पहले देखें कि बाइबल के लेखकों ने अपने श्रोताओं को ऐतिहासिक पृष्ठभूमियाँ कैसे प्रदान की।

पृष्ठभूमियाँ

पुराने नियम के लेखकों ने अक्सर अपने श्रोताओं के वर्तमान अनुभवों की पृष्ठभूमि या उत्पत्ति को समझाने के द्वारा अतीत की प्रासंगिकता को दिखाया। उदाहरण के लिए, जब मूसा ने आदम और हव्वा के विवाह का वर्णन कर दिया, तो अपने श्रोताओं से इस घटना को स्पष्टता से जोड़ने के लिए उसने अपनी कहानी को विराम दिया। उत्पत्ति 2:24 में मूसा के वचनों को सुनिए:

> इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे (उत्पत्ति 2:24)।

इस पद में, मूसा ने समझाया कि कैसे आदम वाली वाचा के युग की एक विशेषता मूसा के युग में श्रोताओं के लिए प्रासंगिक थी। विशेष रूप से, आदम और हव्वा के विवाह ने विवाह के स्थायी अध्यादेश को स्थापित किया, जो मूसा के दिनों के लिए लागू होती थी।

एक बार जब हम देख लेते हैं कि अपने मूल श्रोताओं की पृष्ठभूमि के रूप में मूसा ने इस घटना का उपयोग किया, तो हम इसे इसी रीति से स्वयं से जोड़ सकते हैं। आदम और हव्वा का विवाह प्राचीन इस्राएल में विवाह की पृष्ठभूमि थी, और यह हमारे समय में भी विवाह की पृष्ठभूमि है।

अन्य समयों पर, बाइबल के लेखकों ने पृष्ठभूमियों को उन तरीकों में प्रयोग किया जिनसे परमेश्वर द्वारा ऐतिहासिक व्यक्तियों की स्वीकृति या अस्वीकृति का पता चला। उदाहरण के लिए, रूत की पुस्तक रूत, नाओमी, या बोअज़ में कोई त्रुटि नही पाती है, और दिखाती है कि उनके पास परमेश्वर की पूर्ण स्वीकृति थी। इसका कारण हम पुस्तक के अंत में पाते हैं। रूत 4:21-22 में, इस वंशावली को सुनिए जो रूत की पुस्तक के अंत में है:

> और सल्मोन से बोअज़, और बोअज़ से ओबेद, और ओबेद से यिशै, और यिशै से दाऊद उत्पन्न हुआ (रूत 4:21-22)।

यह वंशावली दिखाती है कि बोअज़ दाऊद राजा का प्रत्यक्ष पूर्वज था। यह समाप्ति मूसा के युग में हुई घटनाओं को मूल श्रोताओं के समय से जोड़ती है, जो कि दाऊद वाली वाचा के समय में रहते थे।

बहुत संभावना हैं कि, दाऊद की राजशाही की वैधता के लिए प्रश्न उठाए गए थे क्योंकि वह मोआबी रूत से आया था। लेकिन रूत की कहानी दर्शाती है कि इस्राएल में उसका समावेश हर तरह से अनुकरणीय था, और यह कि परमेश्वर ने उसे पूर्ण स्वीकृति दी। इस तरह, रूत की पुस्तक ने पृष्ठभूमि प्रदान की जिसने इज़राइल के राजा के रूप में दाऊद के चयन को सुदृढ़ किया।

और एक बार फिर से, आधुनिक अनुप्रयोग में हमारे पास उस संबंध को फैलाने का अवसर है जिसे रूत के लेखक ने अपने मूल श्रोताओं के लिए बनाया। जिस तरह रूत के लिए परमेश्‍वर की स्वीकृति ने दाऊद के समय में दाऊद के वंश की वैधता को दर्शाया, यह उस पृष्ठभूमि को भी प्रदान करता है जो दाऊद के महान उत्तराधिकारी, यीशु की राजशाही को हमारे समय में मान्य करता है।

पृष्ठभूमि प्रदान करने के अलावा, अतीत और वर्तमान के बीच लेखकों द्वारा बनाए गए संबंधों ने उनके मूल श्रोताओं के लिए अनुसरण करने या अस्वीकार करने के लिए मॉडल भी प्रस्तुत किए।

मॉडल

> कभी-कभी जब हम बाइबल की कहानी को पढ़ रहे होते हैं तो हम स्वयं से पूछते हैं, "तो, क्या यह एक अच्छा उदाहरण है या बुरा उदाहरण? क्या मुझे वही काम कर रहा होना चाहिए जो बाइबल में इस व्यक्ति ने किया है, या मुझे उससे कुछ अलग करना चाहिए?" और उस प्रश्न का उत्तर देना अलग-अलग अनुच्छेदों में अलग-अलग हो सकता है, लेकिन यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत है जो बहुत सी बाइबल की कहानियों पर लागू होता है, और वह है जिसे मैं परिणामों का सिद्धांत कहना पंसद करता हूँ, और वह है कहानी के अंत में देखना और यह देखना कि उस व्यक्ति के साथ क्या होता है। क्या उन्हें परमेश्वर की आशीष प्राप्त हुई या क्या उन्हें परमेश्वर का दंड प्राप्त हुआ? और अक्सर वहीं एक सुराग होता है जिसकी हमें यह पता लगाने के लिए आवश्यकता पड़ती है कि क्या कोई व्यक्ति हमारे लिए अच्छा उदाहरण स्थापित कर रहा है या बुरा उदाहरण।
>
> — डॉ. फिलिप्प रायकेन

आइए यहोशू की पुस्तक में से मॉडल के उन दो उदाहरणों पर दृष्टि डालें, जो दाऊद वाले युग में रहने वाले मूल श्रोताओं के लिए मूसा वाले युग की घटनाओं को दर्ज करते हैं। यहोशू के लेखक ने यहोशू 2–6 में यरीहो की लड़ाई में इस्राएल के प्रदर्शन का एक सकारात्मक मॉडल प्रस्तुत किया, और यहोशू 7 में ऐ की लड़ाई में उनके प्रदर्शन में एक नकारात्मक मॉडल।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यरीहो की लड़ाई के लंबे वृतांत में, ऐसा कोई संकेत नहीं है कि यहोशू, उसके जासूसों, या इस्राएल की सेना ने परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध कुछ भी ऐसा कार्य किया था। उन्होंने यरीहों से कुछ दूरी पर गिलगाल में खतना करने के द्वारा परमेश्वर के प्रति संपूर्ण समर्पण को दिखाया, और जैसे परमेश्वर ने आज्ञा दी थी, उन्होंने नगर के चारों ओर गाते, चिल्लाते और तुरही बजाते हुए लेवियों और याजकों के अनुगमन किया। इसलिए, यहोशू के लेखक ने यहोशू की कहानी का समापन इन सकारात्मक शब्दों के साथ यहोशू 6:27 में किया:

> और यहोवा यहोशू के संग रहा; और यहोशू की कीर्ति उस सारे देश में फैल गई (यहोशू 6:27)।

लेकिन यहोशू 7:1 में ऐ के लिए लड़ाई का वृतांत कैसे शुरू होता है उसे सुनिए:

> परन्तु इस्राएलियों ने अर्पण की वस्तु के विषय में विश्‍वासघात किया (यहोशू 7:1)।

यह पद यरीहो की लड़ाई में इस्राएल के सकारात्मक मॉडल की तुलना में ऐ के युद्ध में इस्राएल के नकारात्मक मॉडल की विषमता को दिखाता है।

जब इस्राएल ने पहली बार ऐ के छोटे शहर पर हमला किया, तो इस्राएल की विशाल सेना हार गई क्योंकि परमेश्वर की इस आज्ञा के विरुद्ध विद्रोह में कि युद्ध की सारी लूट उसके लिए अर्पण की जाए, इस्राएली आकान ने यरीहो से संपत्ति चुरा ली थी। यहोशू और इस्राएल युद्ध में ऐ को तब तक नहीं हरा पाए, जब तक कि पहले परमेश्वर द्वारा उनका सामना नहीं हुआ, उन्होंने अपने पापों से पश्चाताप न किया, और आकान और उसके परिवार को गंभीर दंड नहीं दिया गया।

यरीहो और ऐ की लड़ाईयों के बीच विषमता ने यहोशू के पाठकों को अनुसरण करने के लिए सकारात्मक मॉडल और अस्वीकार करने के लिए नकारात्मक मॉडल दोनों प्रस्तुत किए। इन मॉडल का अवलोकन करके, दाऊद के युग में मूल पाठकों को सीखना था कि युद्ध में स्वयं अपने राजाओं का पालन कैसे करना है।

बेशक, मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम यहोशू के समान शारीरिक युद्ध नहीं करते हैं, क्योंकि नया नियम हमें सिर्फ आत्मिक युद्ध के लिए बुलाता है। फिर भी, आधुनिक अनुप्रयोग में, हमें आत्मिक युद्ध में शामिल होने के उचित तरीकों को सीखने के लिए इन्हीं के जैसे सकारात्मक और नकारात्मक मॉडल के संबंधों का विस्तार करने की जरूरत हैं। सीधे शब्दों में कहें, तो हमें परमेश्वर के प्रति समर्पित होना चाहिए जैसे यरीहों पर यहोशू था, और हमें उसकी आज्ञाओं की अवहेलना करने से बचना होगा जैसे आकान ने ऐ पर किया था। निश्चित रूप से, इन व्यापक आधुनिक अनुप्रयोगों से संबंधित अनगिनत विवरण हैं। लेकिन यहोशू के लेखक ने जो संबंध अपने मूल श्रोताओं के लिए बनाए, उन सभी को उन तरीकों में बढ़ाया जा सकता है जो हमें अपनी परिस्थितियों के लिए उन विवरणों को निर्धारित करने में मदद करते हैं।

> बाइबल हमें कई तरीकों में सिखाती है कि एक धार्मिक जीवन को कैसा होना चाहिए, पाप क्या है, आदि, कभी-कभी इसे सीधे शब्दों में भी हमसे कहा गया है, — आपको यह करना, या आपको यह नही करना, या तू यह करना, या तू यह न करना — लेकिन बहुत बार हमें उन वास्तविक लोगों का इतिहास देने के द्वारा भी सिखाया गए है जिन्होंने अपना जीवन, दैनिक जीवन जिया। और जब हम उन्हें पढ़ते हैं, तो हम जानते हैं कि हमें उनके उदाहरण से सकारात्मक या नकारात्मक रूप से सीखना चाहिए। रोमियों की पुस्तक में यह कहता है, "जितनी बातें पहले

> से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें।" इसलिए हमारे पास सकारात्मक उदाहरण हैं जिनका हमें अनुकरण करना है, और हमारे पास नकारात्मक उदाहरण हैं जिनसे हमें बचना है ... जैसे जब दाऊद ने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया, दस आज्ञाओं से हम जानते हैं कि यह गलत था; हम इसे उस वृतांत से जानते हैं जब नातान ने उसे पाप के लिए दोषी ठहराया। और हमारे पास अन्य संकेत हैं। इस तरह हम जानते हैं कि यह उस व्यक्ति द्वारा एक बुरा उदाहरण था जो आमतौर पर एक अच्छा उदाहरण था, स्वयं परमेश्वर के हृदय वाला व्यक्ति ... तो क्या बात हमें अंतर जानने में सक्षम बनाती है। परमेश्वर की व्यवस्था, स्पष्ट शिक्षाएँ, उपदेश, और फिर यह जीवन में कार्यरत रहा है, और हम दोनों को एक साथ रख सकते हैं।
>
> — डॉ. एन्ड्रयू डेविस

> आप जानते हैं, कि कभी-कभी यह बहुत कठिन होता है जब आप यह जानने के लिए पवित्र शास्त्र को देखते हैं क्या कोई व्यक्तिगत चरित्र या उसका जीवन वह बात है जिसका हमें अनुसरण करना चाहिए। और हमें यह याद रखना है कि सिर्फ एक है जिसका हम जानते हैं कि हम अनुसरण कर सकते हैं वह स्वयं यीशु है। वही एकमात्र ऐसा है जो हमारी समालोचना पर पूर्ण खरा उतरता है। बाकी सभी को हमें बहुत सावधानी से जाँचना चाहिए। उनका जिक्र अगर बाइबल में हैं तो आमतौर ये जरूरी नहीं कि हमारे अनुकरण करने हेतु ही है ... लेकिन जब हम यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि कब हमें अनुकरण करना है, कब हमें जीवन का सबक उनसे मिल रहा है और कब नहीं, तो आपको संदर्भ को देखना होगा, उन कार्यों के बारे में, उन कार्यों के परिणामों के बारे में क्या कहा गया है, क्या वे राज्य के विस्तार के लिए योगदान करते हैं या नहीं, लेकिन मुख्यतः नैतिक आज्ञाओं को देखे जो पवित्र शास्त्र में हैं और वहाँ अपना निर्णय दें, और यीशु को छोड़कर सभी को उचित रीति से जाँचें। हम जानते हैं कि जो कुछ भी उसने कहा और किया वह भला, सत्य और सुंदर है। बाकी सभी लोग बाइबल की नैतिकता के सूक्ष्मदर्शी तले आते हैं।
>
> — डॉ. सैन्डर्स एल. विलसन

अंत में, पृष्ठभूमियों और मॉडल को प्रदान करने के अलावा, पुराने नियम के लेखकों ने अपने मूल श्रोताओं के अनुभवों के पूर्वानुमानों को शामिल करने के द्वारा अतीत और वर्तमान के बीच संबंधों को बनाया।

पूर्वानुमान

बाइबल के लेखकों ने अक्सर अतीत के बारे में उन तरीकों में लिखा जो बताते थे कि कैसे अतीत की घटनाएं उनके दर्शकों के सामने आने वाली परिस्थितियों के एकदम समान थीं। संबंध का यह प्रकार उस साहित्यिक उपकरण के समान है जिसे "पूर्वाभास" कहा जाता है। पूर्वाभास में, कोई लेखक कहानी के पूर्व विवरणों को उन तरीकों से प्रस्तुत करता है जो बाद के विवरणों का पूर्वानुमान लगाते हैं। और बाइबल के लेखकों ने कभी-कभी इन्ही उद्देश्यों के साथ अतीत के बारे में लिखा। उन्होंने अतीत की घटनाओं के बारे में उन तरीकों में लिखा जो उनके पाठकों के अनुभवों का पूर्वानुमान लगाते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

एक प्रसिद्ध पूर्वानुमान अब्राहम की मिस्र की यात्रा के बारे में मूसा की कहानी है, जो उत्पत्ति 12:10-20 में दर्ज है। निश्चित रूप से, मूसा ने अब्राहम के युग में जो कुछ हुआ, उसकी सच्चाई बताई, लेकिन उसने कहानी को उन तरीकों में समझाया, जिससे उसके मूल श्रोताओं को अब्राहम और स्वयं के बीच कई समानताओं को पहचानने में मदद मिली। उदाहरण के लिए, अब्राहम अकाल के कारण मिस्र को गया, जैसे कि मूसा के मूल पाठक मिस्र में अकाल के कारण थे। फिरौन ने मिस्र में सारा को अपने हरम में लाकर अन्यायपूर्ण तरीके से अब्राहम को बंदी बना लिया था, ठीक वैसे ही इसी तरह मिस्रियों ने मूसा के दिनों में इस्राएलियों को गुलामों के रूप में रखा था। परमेश्वर ने फिरौन के घराने पर महामारी भेजकर अब्राहम को छुड़ाया, और मूसा के दिनों में उसने मिस्र और फिरौन के घराने पर महामारियों को भेजकर इस्राएल को छुड़ाया। फिरौन ने अब्राहम को बहुत धन देकर वापस भेजा, और मूसा के दिनों में निर्गमन में, फिरौन और मिस्रियों ने इस्राएलियों को बहुत धन के साथ भेज दिया।

मूसा ने इन समानताओं को यह दिखाने के लिए बनाया कि अब्राहम के अनुभव ने स्वयं उनके अनुभव को पूर्वानुमानित किया। मूसा अपने मूल पाठकों को प्रोत्साहित करना चाहता था कि वे मिस्र में अपने समय़ को आदर्श मानने से फिर जाएं और कि वे अपने छुटकारे को उनकी ओर से परमेश्वर के शक्तिशाली कार्य के में देखें।

एक बार फिर, आधुनिक अनुप्रयोग में हमारा कार्य उस संबंध को देखना है जिसे मूसा ने अब्राहम के जीवन से लेकर अपने मूल श्रोताओं के लिए बनाया, और उस संबंध को हमारे आधुनिक जीवनों के लिए विस्तार करना है। उदाहरण के लिए, नया नियम सिखाता है कि मसीह ने हमें दुष्ट के अत्याचार से बचाया है, ठीक उसी तरह जैसे परमेश्वर ने पहले अब्राहम को छुड़ाया और बाद में इस्रालियों को छुड़ाया। इस तरह की समानताओं के माध्यम से, मिस्र के लिए अब्राहम की यात्रा उन तरीकों का पूर्वानुमान लगाती है जिनमें आधुनिक मसीहों को परमेश्वर के प्रति हमारे विश्वास और सेवा को समझना चाहिए।

जब भी हम पवित्र शास्त्र को लागू करते हैं, तो हमें उन युगांतरिक विकासों पर विचार करने की आवश्यकता है जो बाइबल के और हमारे समयों के बीच हुए हैं। और पुराने नियम के लेखकों ने पृष्ठभूमियों, मॉडल और पूर्वानुमानों के माध्यम से जिन संबंधों को बनाया, वे ऐसे पैटर्न प्रस्तुत करते हैं जो इन ऐतिहासिक युगों के बीच खाई को पाटने में हमारी मदद करते हैं।

उपसंहार

आधुनिक अनुप्रयोग और पुराने नियम के युगों पर इस अध्याय में, हमने पुराने नियम के इतिहास के युगांतरिक विभाजनों को उनकी विवधता, युगों की एक आम रूपरेखा, और इन विभाजनों के निहितार्थों के संदर्भ में देखा है। और हमने इन विभाजनों के बीच युगांतरिक विकासों पर उनके सुसंगत पात्रों, एकीकृत कहानी, बाइबल के लेखकों द्वारा पहले के युगों के उपयोग, और युगों के बीच संबंधों के संदर्भ में विचार किया जो हमारे अनुप्रयोग की मदद करते हैं।

जैसा कि हमने देखा, परमेश्वर की वाचाओं ने बाइबल के इतिहास को प्रमुख युगों में विभाजित किया जिनके अलग-अलग ईश्वरीय-ज्ञान वाले झुकाव थे। इसलिए, हमें कभी भी अतीत के तरीकों की ओर लौटकर अपने समय में परमेश्वर की सेवा करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। लेकिन हमें उस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए जिसे परमेश्वर ने अतीत में प्रकट किया। जब हम उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिनमें ईश्वरीय-ज्ञान के विषय जैविक रूप से एक युग से दूसरे तक विकसित हुए, तो हम पाते हैं कि वाचा वाले पहले के युगों में परमेश्वर ने जो कुछ भी प्रकट किया, उनमें, हमारे युग में, उसकी सेवा करने के बारे में हमें सिखाने के लिए बहुत कुछ है, यहाँ तक कि मसीह में नई वाचा वाले युग में भी।